पहला अध्याय—कवि का वैगोन

समर सिंह के सात बेटों का हाल

पंचनाम देव में तुम है ज्या दयाल।
सुरखा का दिल मज करिया उखबल।
ईश्वर कौ व्यान धरि उदासू कलम।
सब जग रेनो माण्या जलम चलम॥
धन धन हरि तुम चिण भगवान।
आचिनों की लक्षणों की दिया वरदान॥
हृदय में बेठि जग सरस्वति माई।
गणेश ज्यो त्रिधन हरि करिया सहाई॥
धन धन हरि तुम धन तेरी माया।
कसा कसा ज्यला हया सदा के निरखा।
सत्तर सो नब्बे का मैं सुणान मो हाल।
गोरखा ते जित जब श्रमों गढवाल॥
तै बख्तार समर सिंह गुज्जू कोट मज। 
सात च्यला सात व्यारी चार पटी रज। 
तला पटी सल्ट मज समहु छी हीत। 
कस छी बख्त भया किसी छी श्रो रीत। 
गुज्जू कोट मज विय तैक बसनाम। 
चार दिन दुनिया में चले गया नाम। 
सात च्यला सात व्यारी खूब भर पर। 
चार पटी मालिक छ कैंकी निद्रे डर। 
कुण्डेत बारीडा में कर्म खणी स्पर। 
गुज्जू कोट मज हैरे वन घने ढेर। 
वारी सुख वन हैरी भारी छी सम्पति। 
जब ग्रांटी बुरा दिन बैठी जै कुमति। 
सात च्यला समहु का मारी घुंसौर। 
श्राइ गया ग्रांत्यान नित्यना खैती। 
सात बेटों का—श्राय जना लोगों की श्रो लूटना रेशाला। 
भवीमाली बाकरी का श्राइ जाहिना कोला। 
श्रण ब्याह चेलियों को ठाकुर चारी खानी। 
वाट घट जेक भाल ले उठानी। 
दुखियों का—श्राणियों जरियों लोग है गई हारन। 
वटा घटा बन्द हैंगी सुणी। भगवान। 
हमारी पुकार लेहीं इंश्वरा दरकार। 
गुज्जू कोट मज हैरी कस श्रात्याचार। 
साते च्यला मरीजे श्रो बंहारी हैरीं सानी। 
श्राइ बैरी हुँक दिची यसा। ग्रांत्यानी।
जग जग सब लोग दोब जन गाई।
टोटोली है जाली कभी नाजुक कसी नाही।
तैबचता जर श्रया मुजुक तमान।
इलाका में फैली गया जादू की समान।
कुछ दिन मज सब भला हुई गया।
आखरी में जर जर मुजुदू कोट गया।
जर है कुजर हैगी मुजुदू का कोट।
कैमणी कछु द्रोण बाबू अघणी छी बोट।
जैकणी श्रो जर आर्थ निजिता ठाडा।
मुजुदू कोट मज लेगे डुंडियों की डाड़।
लोई गय व्रभिमान, स्वर्ग गहर।
डुंडिया की गाई बाबू लागी गहर।
सात च्यला समूह का परित्या रेगा।
बारी बारी पर भया हसी दूँग गया।
सात दिन मज तब सात च्यला महा।
साते च्यला रानी हैगी तब त्रया जरा।
साते च्यला महरी गया एक ले निरय।
हाय करी समस्त कठ रुकी गया।
आठों दिन समस्ता स्कवावास हुया।
छै मेहेंद ठूँ हीत कैट मुथा रया।
एक छै मेहेंदी हर्षसात छे भौजिया।
देखण छहो मज मन का रोजिता।
भल मैंसों च्वली छिया खानी दानी घर।
कसी जानी यथा उथा सरमें की हर।
हरुबा का नाम पर उमर कोटनी।
शन धन के निर्य गेंदी क्वोला खानी।
खानदानी घर छिया हई गई रेक।
शूर बारे मरी गई हुर रय एक।
हो दिन बचण हय निकय ग्रहन।
जलि ज्ञानति हलो योतो हैवरी का वास।
भुलीमा करि गया बड़ी बढ़ी नास।
हमरो क्य मिनती हई देशों को निरह।
गूढ़ कोट गरसं ले कसी दसा भई।
हीये स्यरा बजा हुया बन्द है रब्रम।
निरहें दर कैंकी ने हेंक हुकम।
दर है निउर हैगो खुशी हुया वोग।
बात च्वला सरी गया उड़ी गय भोग।
महेनी भोजिया हृद करनी पालान।
जो पूछल हुरबन बताया लें भन।
हसुका—चार पाँच वरस क हद्वा है गय।
पड़ुण विजयाँ तब झूल गय।
दिन मरी इसकुल व्याल कीं खेल।
तनतिन्द्र मज भयों पौली बटी मेल।
जसे जैक काम हौठा उसेंग करनी।
मछा रनी पाणी जज बच्चा ले तैरनी।
कबे हृदें दिवान वीक कबे हैं छा संतरी।
अशु हृदें रज हूँ ठाड़रें संतरी॥
एक दिन एक नान कन हैल चोर।
हरुब्र हुकम लेगो हात बांधों डोर॥
कान ले पकड़ी बेर भारती ही लात।
श्राज बटी छोड़ी दिये चोरी की लैं लत॥
चोर जो बनाय बाँधू तैक नाम मोली॥
ऐसी बोली मारी बेले वात अण होती॥
चोर—गरमे ले घाय कोछा सात भाई स्यरा॥
कार बार बन्द हय बाँज हया स्यरा॥
चार पट्टी जिमीदार निदिना रकम॥
डर है निकक हैगो न केंक हुकम॥
तब कोला च्यांतो छे तु उधालैं रकम।
स्यर ले आबाद कले दिखले हुकम॥
चोट साले उमर छो हस्से की तब।
बदन मे श्राग लेगे बोली मारी जब॥
हृद का...एक दिन त्यहेंगो हूँ महेंड़ी का पास॥
हाथ जोड़ी कोछ इजा श्राज छ खास॥
केती ममै कती खूटी सात भाई स्यरा॥
कतीं ले इलाक स्यर कती मेरा स्यरा॥
भेद 'भजन' छिपये तु सांची कये बात।
भेद जे 'दिवाली' इजा कीला जीव घात॥
मांता का—यनु बात मुही मू बोह भिज भरि श्राय।
को हनन हृमर भेद जो बताय॥
निवतानू में जब ये बड़ी हुई।
बजरे की छाती करी समभाया।
तिकणी कराये च्यला नौरमल पास।
काला दिनो याद करी मैं लागू निसास।
कुल्हेत बौरणा में करू लणी स्थरा।
घार पट्टी मज च्यला जिमीदार त्यत।
जै महेनो छिये च्यला साते भाई मरा।
बाहु तेरा मरी गया छुट कारबार।
उदिन बैं बेटी, बांजी बन्द है रकम।
तिरहेगे इंड बैंकी न कैंकी डूर कम।
हूँ का—इन बातों सुणि हर उठियो जहर।
गुस में भरिगो ह्रें बाल भरे भर।
श्राज तक निवताय इजा क्वीले बात।
ऐसे बाल सुणी मेरी जली गोछ गाँव।
मैंत जाना मेरी इजा चारी पट्टी मज।
किलक रकम हरी कॉष्ट मन मज।
एक हाथ ढाल शाम एक तलवार।
दीन घरी घोड़ी मज है गयो सबार।
हस्से की घोड़ी नहीं गोव्स्यां नवा मज।
जिमीदारी कण्ण हर बाद मारी तब।
चौद सालें रकम व सब नत मारी जानू।
यति करी जम सब नत मारी जानू।
स्यर स्यर बांज रह रकम लें बन्द।
चाहे वेतना घर कुड़ी चाहें करी चन्द।
रकम ले जम कबो स्थर ले अभाद।
जगा जगा क्वस्त्रा मज लगे हैछ धाद।
दूसरी गो धाद मारी सूजता पट्टी।
आज तक चुपै रंग लगताले बटी।
मालकनी समेत ग्रो रकम ले ह्यावो।
बौरडी को स्यार स्यारी अभाद कै जावो।
हुर्वा ग्रो होत नैहो बसनाई फट।
या मानो हुर्वक मोरो न पूजानु घाट।
हुर्वा की धाद सुपी हैगी भयभोत।
कती बटी ग्रोच कत्री हुदसन हीत।
जमिदारों का कुदार के छील सया ग्राह कती बटी।
इनुले निलाष दिव लगताले बटी।
गौनू गौनू मज सब जम हई गया।
सबें एक मत करी सुपी स्थवर भया।
रकम ले मालकामू हैत देखी ठेकी।
सेणी बल्द लाथ जेला इमजी छ नेकी।
घर घर मज सब बने हैला स्टं।
सबासे बेकार लागी राते लागो बट।
क्वस्त्राके ग्रो जिमिदार कुणतेत ग्राह।
सलटीयों की बात गुपी लिया भया।
पैली बटी नामी हया सलट का सलिद्या।
बहझालू बड़ हया ठुला ले बलिद्या।
हुर्वो ले हल श्रामा सेणियों ले बरा।
ठुलाघो बटद्री का वाहू बाजिया नेवरा।
बौद्ध का स्थान मज राते नसी गया।
दैेंकी ठेकी जम करी कार लागी गया॥
हलिये ले हल वाय जलिया साथ।
ढूयँ स्वर स्वर हैं भारी सोमनाथ॥
उब्बाव हुमाहुमा हुरु टुड़ी गेछ नीन।
हाथ जोड़ी माता हुणी हैरठ शाब्दीन॥
ढ़ा मजा जाई वेर देखा श्रानं स्वरा।
आई किन तिघ्रवा हुजरा जिमोदार स्वरा॥
हुक्का—ढ़ा मजा जाई वेर लागीगे नजर।
ढूयँ स्वरो सेनी में लागी रई कार॥
खुशी हई गय हुरु आई घर घर।
धववं मज जीन भरी वादी सियो नेवर॥
रेशमी कपड़ा पेंरा पुतिलिया पाग।
धववं मज सवर हैगी बांसरी में राग॥
कुणवेत रजर नहँगे हुरुं जी घाजी।
सब भूर स्यो लगानी हाथ जोड़ी जोड़ी॥
खुशी हवे नसी हुरुं बौद्ध स्वरम।
सल्टा क सल्टिया सब हई गया जब॥
जमीयारों का—सब भूर स्यो लगानी हुस्ता ग्राम॥
घाजी वे उतरी हुरु बैंगो बीचम॥
छोटा ठुला में सेनी जम हई गया।
ही स्वरों का लोग सब बैंट गया॥
हुक्का—क्षानदानी च्यला दिय कसो कोंछ बात।
हाथ जोड़ा श्रादुहु छ नानी ठुला बात॥
बहू गछा हुण जशा बुतो जया झान।
भालि है जो तुमरी ले धारी गछा मान॥
जनुक ऐरछा येती मेरो भाई बैंनो।
मेंस जला देर मजी बेरे जारश्रो देंनो॥
कचे हुनला यकलाश्रो कैका नना तिना।
उनर शराप भाई लागली शानिना॥
सबे मैसो हुणो हर हाथ ले जोडिया।
घरज छ मेरी भाई मैं छेत छोडिया॥
श्शृण दिन की तुमसू मुहानू फिकर।
कय वटी-करी हालो झाउ की जिगर॥
सीडी सादी नानी हवीघर खान दान।
सात ले भौजिया घर महेसी समान॥
आठवा छ डजा मेरी बुझिया पुराण।
सबी को जो सेवा करो ऐसी हो बौराण॥
ऐसी बात चौंत हैरे बौराण स्पर्मा॥
दुश्मन नसी गय हुस्वा घरम॥
हुस्वा भौजिया हैनी कसी कोछ बात।
मेरी बात सुणी कोछ रानियो ग्रो सात॥
देवरा कारण काटो दिन रात॥
जिमोदारी हेतो हर ऐसी कोछी बात॥
भद खान दान चेली जैक बल नाम।
उरसी बौझिया कोछा भौजी कैलो काम॥
जो मेरी बौराण हसी रसी सब चौर॥
सात जो भौजिया मेरा कारीला खातीर॥
सूर्य बृहस्पति श्रवण तुम्ह ले नौकर।
तुमर रहणी, बेटी बड़ी, छ बिकार।
भाषियों का—भृजियों ले सुनी जब दुष्मन बात।
गुस्सा मजि भरि बेर धालनी यो घात।
जे बौराण् भली लयाये बेरी हैंगे, रान।
भत्ता शाण पये हरू दो खरों धान।
हिंदी दिदि सुनी श्रवण हरू नसी, जोला।
हरुवा जे ब्याएँ कोंचा कलक रहोल।
कमर बरति बांदी हत पर दाती।
साते भौज क्षति बाली बैठि जे कुमति।
बौराण् कुण्डेत बैन सड़क में गया।
सड़क में जाई बेरा धोस्यला ले गया।
धोस्यला
बकरै की खानी धम्मा धोस्यला।
जे बौराण् भली लयुलै धोस्यला।
बेरे हैंगे रानी धम्मा धोस्यला।
पकरे हैंगे मान धम्मा धोस्यला।
भत्ता शाण पये हरू धोस्यला।
हे सेरी का धान धम्मा धोस्यला।
लट पटी लोडी धम्मा धोस्यला।
बेटी बड़ी खाली नहीं हैंगे धोस्यला।
हरुवे की घोड़ी धम्मा धोस्यला।
हरुवे की घोड़ी धम्मा धोस्यला।
सात और भौजिया हुए तनिगी चौपट।
घोंघळा गँबर धर लागो गँगा बट।
मिजातों में जानी तब मतवाली चाल।
धर सुनि लियो आखिला का हाल॥
चामीबेट मज हैला दो हाई मैतिया।
हम धर्म नाम छिया बड़े पैंक छिया॥
घर बटी धर गयो भैसी की खबर।
लालू ठाट पर तेले आँखुआई कमर॥
तब तक आई गई सात यो मैतिया।
धर्म लैँ खबर पुछी कतीक जानी॥
धर्मा को तुमरी सौराष्ट्री छा का तुमरी शैत।
कबुपता उना ज़ाका घमिला छा चैत॥
सौराष्ट्री का यतु बात सुनि बौराणियां कनी।
गुजड़ कोट हैती बान सात हैगी रानी॥
श्रीर शबर गयी एक छ देवर।
चांगरा का खोज जानू तला श्री भावर॥
हमारा लैँ दिन धर मिलवा बेहती।
तलाशो भावर जोला सब चुक जही॥
धर्मा का यतु बात सुनि बेर तब कोमा धर।
तिरिया धरबल हई निधि सजम॥
न जाश्रो भावर तुम चेता का महोना।
धर्म लागो बेर, श्रीती ऐ जाली भवीन॥
जहां ज़ता श्रावर, दो हिटो भेरा घर॥
भावर जेबर बुसू लागी चैला जर॥
चीरागियों का साताश्रो चीराणी कनी सुणी लिया बात।
देवर छ काल हुँ हीत जैकी जात।
सुणी बेर हरबैं ले करणी चौपट।
सवों की सुनई सज भूटी जलो भट।
धमा का यतु बात सुणी बेर तव कोंछ धम।
कसी क भुटल भट हम जै सौ कम।
हसवा जै येती आलो लिभुगुती जान।
बांडवा गिनवा जस फूकुला अस्मान।
साबों का जाना यतु बात सुणी बेर साते लौटी मग्या।
धम का दगड़ा घब चाणी क्षेत गया।
चाणी क्षेत मज बाणी। दे हुव पराई।
हम कोंछ धम हैंती सुण गेरा भाई।
तीन सैणी डैरा बांट तौन गेरा हनी।
एक सुवा बांकी रेगे उसमेरो जेटुनी।
दी भाइयों बात तव चाणी क्षेत हुया।
आवित्त क दूरवे के बात सुणी लिया।
जिमीदार पर माया हरु गुजू कोट।
खनखनाट ध्वंन पड़ जब चाय गौठ।
घास पाट के निरंदेल नहे गया। मतिरा।
भूजिया को गई इजा है गेछ अर्वेर।
कती गई मेरी इजा भूजिया ग्री सात।
धी काणो हैरे हरु फिकरे की रात।
शुरुब उज्ज्वाई मज हरु हो तैयार।
एक हाथ दाल शामो एक तलवार।
मेंत जानू मेरी इजा भौजियों खोजन।
क्या बात है मेरी आज जो रहैगी वण।
यात खाया स्यू बागै लै यात पट पैड़।
स्यू बागै बदल लयोला टुट हूणा ढाड़ा।
हुहु नहीं हीत नहैगो जंगलो जगल।
बांसुई खानम देवि भौजि घस्यरी दंगल।
हाथ जोड़ि हुन। कीछ सुणी मेरी बात।
उन्हा उमा जानी देवी भौजि मेरा सात।
सैणी कनी सुणी रिया रज जयू हमरा।
पति हम बतै चुला लोटै जास्री घर।
सात भ्यो भौजिया नहैगो मैसियों का घर।
चानी बेत मज हैला उनरा ले ह्यारा।
हम धम नाम हुल पैक छुं भारी।
भन जया चानी बेत तुम दिला मारी।
यतु बात सुणी हुल टूटी ने कसर।
के बतोला इजा कपि कसी जानू घर।
धिकार, छा भेषणी ले लोटी डरिक।
ग्रापु हृणि भांस रय उमरा भरी।
ढर्पोक व्यौल ले ग्राज्जै कब ले बच्चो।
यात नाम समें जाणो या मबल बरणो।
जस हजी भुगुला भौजियो कारण।
या लयोल भौजियों कनी या चुला प्राण।
मार मार कने हुल चानो बेत गय।
मोवा का झुपड़ मज बैठी लक गय।
हथियार भी में धरा बात सुनी रय।
शोधी देर मज तब हस्तव ले कय।
हरू का सुनी लियो मेरा भाई में माफ न के दिया।
मेरों ले भीजियों कण में कण दिदियो।
यतु बात पड़ी गैंच हमा का ले कान।
को ऐ रौछ भीजि वायु फट लेगे दान।
हुस्था का भीजि वायु म्यार शुला को पैरह न्यार।
कान के पछड़े बेर पैंकी कोसी पार।
यतु बात, सुनी हरू उठिगो जहर।
गुस्सा मज भरी बेर बाल भरैं मारु।
हरू का भ्यार क्यले निर्म्माणा भो निगुरा कुजाबि।
ढाड़ इई रयो मैंले बोलि रेख छाँद।
यतु बात सुनी बेर धम भाई गय।
ढीयों का आफस मज ग्रंग मिग गयार।
धस्था हरू का लड़ना हरूवा हरीकृ हरे नौमियों बदत।
धम पैंक लड़ि गया मालू कस कान।
ढीनूक है गया तब मल युत्थ भारी।
शुस्सा मजा भरि बेर हस्तवे ले मारी।
हरूवा गारण मज गिरि गोय धम।
फट फट हरू तब वैठिगो छातिम।
हस्तवे तागत देखी घबघाय धम।
तिरियों कारण ददा भरी गय हम।
धस्था का म्यार माण पार निले तिरिया लहगी।
मेरी ले तरफ बटी साते छे तेहण।
बतु बात सुनी देव हम घैंगो भयार।
एक दम लड़ गयो कठे कसि चार।
हुम हर हड़ गया धम हों सैयार।
हर पर कदिया हछ लड़ स्वरो मार।
तीन दिन तक रगो भारी घमसान।
ढोंगो का दरहा लड़ गिरी गो निदान।
हर को मार देना बेहोश - हर्गोघ हर पड़िरी जमीन।
हर हम ढीरे माई पढ़ी गेह नीन।
लाश पढ़ी रैंछ हर हैं उड़ि धोय।
महेंड्री क पास जाय भरीणा मजी कोग।
स्वर में माता से चानीखेत मरी गय भोजना कारण।
लाश पढ़ी रैंछ ढोंगो उड़ि घो।
हमा धमा साथ इजा तीन दिन लड़ी।
भूख कारण इजा जमीन में पढ़ी।
एक दिन मरण छा एक दिन काल।
अपन पत दुख गाय त्यह जनि जाल।
पाठ छंला सेती दरें है गई योनाथ।
कसो रौयी भुजू कोट को निरय साथ।
स्वरो मजी कछ तब सतबंती माई।
क्यों गूं साथ चानीखेत के कुमति गाई।
कसो भूख लागी चंला जो हम निराय।
वैंच भारी दुख चंला ते विलोला खास।
गोदी में बिठाई बर छाती घों लगाय।
महेंड्री क दुख पिये फेट भरि गाय।
जिन्हा होना स्वप्ना रणम हृदेपत भरि गोय।
मुण्य सुणि कने भया जागण भैंगियो ॥
गुज्जू कोट माई जागी हुहु चानी खेत।
उबरायव हषम होये हे गडी स्वेच्छ। ॥
श्रांख धुला गहेड़ी का स्वणि भराई याद।
श्रापर गोरिया केंद्री मारी हली घांद। ॥
माता का संघ जै सोरिया वले हुहु बौढ़े लवये।
चलौ स्यार दरी जाली तू माट बुकाये। ॥
हलै ब उड़ान नहेगे गोरिया भामन।
दुखिये श्रावज नहेगे गोरिया गानम। ॥
सहेंणी लै घर जब गोरिया का ख्यान।
श्रांख स्कुता हृहवा का हृदया में जहाँ।
हुहु का श्रापर भागम हुहु कांठ विचार। ॥
क्या कुमारि भाई कोश जो छोड़ी हत्या।
गुस्सा मज हृहवा का ग्रास हैंगो लाल।
कस करी भ्राज कोश वेमीत वे काल। ॥
जै लाग हृहवा तब उठाई तलवार।
कतु लुका चोर जार भाई जोवी भ्यार। ॥
हुहु भी की भाद मुण्य सवे चौंक गया।
मरियको जोगी हैंगो सुण स्यार मया। ॥
दोनी माथों का हिट म्यार दुना। भ्राज वायु भाई जोला।
मारी बर सोवा सेत हृहवा दबौला। ॥
भ्राज भाई वस करी भाई। गढ भ्यार।
हृहवा ले याम हैला ढाल ले तलवार। ॥
हम धम हुँै हैनी देखनी तलबार।
हुँ पर करी तब लड़ बल्टी मार।
हुँ को मार देना ढाल पर रोकी हुँ लड़ बल्टी मार।
हुँ सरा हाथ ले हुँ चलै तलबार।
हम धम ह्री मानों का सिर काटी गया।
लाश पड़ी जमीन में हुँ उड़ि गया।
जे लाग हुँघा तब खरक भितर।
साती का घम्मली थानो गुस्सा भरे बेर।
घर बुझो लगे बेर साती ल्यां भ्यार।
सात-श्री मौजिया तब है गई लाचार।
भासितों का घमली ले छोड़ि दियो हिठी बेर योल।
ग्रांडी दिल को हुँ वात ले बतला।
सेती पाई, बेहुँ तुम बनाया जवान।
श्राज श्री मोजिया बैठा हुँ हैवे वान।
तुम्हार कारण उँगे जवानी हमरी।
हुँ हैवे वान श्रव को हुली दुसरी।
सबों हैवे वान दया भूट में बतानी।
मालू श्री रोतेली हल्ली दुनिया गाहिनी।
हना जबा भ्याला हुँ हलू व्यँवे ल्यान।
मल भूट मज् तुम नाम को भान।
भ्याला हल्ला मालू ल्याला नंतर सियार।
कुतु भुकि जानी यसु कुकुरे को चार।
तिरियो वचन सुगी हुँ कलेजी में गयो।
गोलो का समान लागौ टकड़ा के गयो।
भौजियो लीबर हरूँ भाये गुज्जू कोट। कलेजी में लागी रेछ बचनो की चोट। हरू का — हाथ जोड़ी माता हरू सिर ले मुकाय। तेरी लै सहल हरिण भौजिया लि ग्राय। तू रहै इजा मेरो येती गुज्जू कोट। बचनो कारण ग्राज जानू भला भौ। ब्यैंचे वेर घूमना ईजा श्री मालु रोतेली। दुनिया गाहिनो हैं मालु सोके चेली। माता का हरूवे की बात सुनो हिय भरी ग्राय। महेदी का ग्राज़ मज सौण मुलिग गया। क्यलै गल भोट कवढ़ यस काम। केल बहकाअ च्या केछ बीक नाम। हरू का — हरू कोङ्गा तब सुण इजा बात लै बतै। भौजियो लै बोली मारी कोसक रहनू। माता का माई केछ सुण च्या निराड्न हुठ। तूल जालै भोट हरिण कोट रल पट। नजा नजा स्थार च्या भोटाङ्गा का देश। भौटिङ्ग, दग्ग च्या निपड़नी मेझ। जाँडू का परोङी, रनी त्रिपक भरिया। ज्योंने जिया की निलोटा बोलता है सरिया। निमानै जव तुम मेरो के जा मेरी गत। तूल गाये भोट हरिण मेरी है कुगति। जब सुणो हरूवे ले महेदी की बात। मैं निजानू भौट हांग बहकाई बात।
हरू का हरूबै ले मन मनज मत्त ले उपाय।
वामण के पास जाई सुदिन कराय।
घर आई बेर हरू महेड़ो नवाई।
सुनई कटोरी बेर पलग स्यवाई।
बुझिया पराण हरू पड़ गई नीन।
हरूबा गो हीत ब्रज क्य करू च्राचित।
हरूबा गो हीत तब कहचा बिचार।
जन का लिजिया हरू है गोछ त्यार।
ध्वजा पास नैं गय हरूबा ले हीत।
सजाण मे गोछ घोड़ी सुनो लिया नीत।
सुनहरी जीन घरि घर दूलटे की रकाब।
सिर मे कलंगी माजी घोड़ी क्या नवाब।
मोती चूर लगाम बो घोड़ी पै लगाय।
घोड़ी सजीं बेर हरू मीतर एंग।
रेशमी कपड़े पौरा पुलिया पाग।
हियं भरी ग्राम हरू मन मे बेराग।
एक हाथ ढाल थापी एक तलवार।
विरोधी बांधुरी घरि मन मे बिचार।
इजा कणि हरूबे की पट्टी रेती नीन।
हरूबा ले हीत तब क्य करू च्राचित।
माला से मेरी इजा गुज़ुकोट तू रया निचना।
स्मार ले लिजिय इजा तु रोंगे ले भन।
सात भाई मरी गया तब इजा छोड़ी।
मैं पापी निचुली इजा गैंले ज्योंने छोड़ी।
मल भोट जानू इजा मालुक परण।
गुखडकोट छोड़ इजा बजनू कारण॥
हरूबा का ग्रामों मज सौण कुली रया।
मन मने मज हरू महेण्डी है कया॥
सांच झ्यल त्यर हाँला लौटी घर आँला।
भूटी जै हनल इजा मल भोट रोला॥

तासंग श्रद्धाय
हरू का मालु के लिए भोट जाना
हाथ जोडी माता हुण हरू, हौ सैया।
रकाबों में खुट धरी है सयो सवार॥
घवड़ मज वेंठ हरू घट लाभी गयो।
बजनू कारण हरू मरण हैं गोय॥
महेण्डी का ध्यान धरी शाखिया नहै गया।
जीव जन्तु गुखडकोट मुरण लै गया॥
हरूवें की चोड़ी नहैगे हुरण का बर्त।
निगलानौ वटी नहैगो गमिणी का घट॥
तब श्राई गोछ हरू पितरोंक ध्यान।
भोट करी जानू कोंछ श्रापण तिधान॥
ध्यान लौटे वेर गय जा छिया तिधान।
हंसी हुंगा मज कय घरच घुपान॥
हात जोडी हरूवें ले करी अराधना।
सांच जै पितर हुला में छोड़िया भन॥
भोजियों कहण पर मर हुण जानु॥
तुम छा पितर स्त्वरा पुकार कै जानु॥
भी महला भोट जब बंध मिट जालो।
• गुज्जूकोट रोजेह दुग्ध सांत हई जाले।
तीथाण मै थाड़ मारी याद घानी भाई।
ज्योत हुना स्थर ददा करना सहाई।
फुटिया करम म्यारा ग्राह ने आधार।
भोट मे अश्फत आली सुणिया पुकार।
सांत जे तिथाण हलो पितरों क हेती।
• मै महला भोट जब बंध जाने ऐजै येती।
सनी कोले नाम जपी जतु छो सरीया।
बटलागी गय हरु विरोध भरिया।
हुड़ बुड़ी चाल लूरे मालूक छ ध्यान।
ध्यान के बिखत हैगो भगोती दुकान।
बजारा ढांकरी ऐरे घर का लै आया।
सब वो ढांकरी आती जम हैई गया।
हुस्ता वो हीत कोछ सुणों वस मण।
जपी लोग रंट दिया अश्ली गुण चण।
पूड़ चण लाखा सब खाई हैली रौं।
उप्याय दुग्म हरु लागी गोव बट।
आकेरी खवे छ मेरी नक जन मान।
बिखिली मुकुंक जनू ज्येनोला भगवान।
ध्वद्ध सबार घव माझी है मुहल।
विरोधी बांसूई हरु कलेजी कोर।
हस्ते वाङ्गुई बाजी डोणिया का भाम।
बग्दा मै लारो गोका सेणी लैरे काम।
विरोधी वाशुई बाजी कानों पड़ी रैण।
सब सैणों थोक लैंगी राड़ छोड़ी देंग।
शौरत का धन-२ विचरा तू धन माई बाब।
कलेजी विरोध लैंगी कसी रनु आब।
हस्वा यो हीत कोंछ सुणौ सुनो बाल।
बिख की भरिया रैछ तिरिया की जात।
हुए का छोहा तिरिया ऐसी मोहिनी, श्रवणु हैं ये तीन।
पर मन पर धन हर न को तिरिया बड़ी प्रवीन।
यतु कई बेम हुए छब्बै ले दौड़ियो।
चढ़ोई का तला पना हुस्वा ऐं गयो।
कवि का भिकुण्ड मंच्याडी छीय भिक्यासेन मज़।
चार पट्टी मालिक छा भिक्यासेन मज।
घट तैक बोंया हल कुकर खात्सुली।
सात छें बेशुवा तैक जतिया मारखुली।
हस्वे की घोंडी दैगे कड़ोई तल पन।
खल बली मची रैछ भिक्यासेन पन।
दौड़ने एगय तब जतिया मारखुली।
भुक्त्रण में गय तब कुकर खात्सुली।
हस्वे की घोंडी ऐंगे भिक्यासेन पार।
तब तक द्रीये ऐंगे गलासा कितारा।
हस्वे नजीक तब द्रीये आई गया।
घोंडी में वे तब हुए समजून में गया।
हुए का निकय क्षुर भैले निकय अनाण।
निश्चे तेरा भिक्यासेन नित्रु में गाय।
कठुक सम्भाय हर निमानना बात।
जै लागी जतिया तब श्रमुरै की जात।
गृस्स मज हर्वे ले उठाई, तलवार।
मारोखा जतिया तब टुकड़ा ले चार॥
चारी दिशा हृंणी पौका टुकड़ा ले चार।
कुत्ता मारी बेर पौकी भकुवा का द्वार॥
आँधिन लेज जाई बेर घट जो तिंड़ा।
हर कण देवे बेर बैली तिंडिङ फोंठो॥
जै लागी हर्वा तब घट पात फोंठो।
टोड़ी टोड़ी बेर बैली वगाय फिंडी।
भकुवा मन्याड़ि कण पुजिङे सब।
मारे मार कने नैमो वैसुण्डो का घर॥
भकुवा मन्याड़ि कौण सात वेस्यों हैतो।
कसां बैठी रजा तुम क्यों बिपड़ी मत।॥
शुरुं ले शेटी श्रब करिह है चोपट।
जतिया कुकुर मारी फोड़ हैछ घट॥
यतु बात सुनी सात है गई बटम।
बाटी रोकी बात कनी श्राठ सटम॥
भकुवा भकुवा ले धाँद मारी चारों पटी मज।
शेटी आई रोच भ्राज गुज़डाकोट रज॥
बजा गजा लिई बेर लठ बल्टा ल्यायो।
ऐतो आई हर्वे की बुति करि जायो॥
भकुवे की बात सुनी सब जिमीदार।
बड़ा गजा लीई बेर है गया तैवार॥
हर का कहणा ग्रामण मनम हरु कहरा बिचार।

बार पार सब ग्राम जब है रै तयार।
भि-विदारण मज ग्राम के कौतिक हल।
हल चल मछो रेच पड़ी रेच रैल।
बार पार लोग सब जम हुई गय।
हर कण मारो को चिलाण भ गया।
सब लोग देखी जब ग्रामवाज ले सुणी।
मन मज हरु कौछ आई गेच हुण।
ऐसी सोची मन मज कुस हय हल।
कसी जानू भोट हुण ऐती ऐगी काल।
ग्रामण मनम हरु सोचण भे गया।
यों ऐ सरी निरा निरी चुपण के हय।
देवी क सुमिरण करि गोरियण ध्यान।
मेरी ले मदद कय मांगूँ वर्दन।
हुधारी तलवार थामी गेड बाली झाल।
गुस्सा मंज महसू को आँख रैगी लाल।
साली वेमु मारी है रे पुरत गो वाजार।
खटा खट हस्त ले चले दी तलवार।
लडना चोटरफा घोडी नाची हैगो हाँगाकार।
लागी के तेहर लागे मून को ले बार।
ग्रामवाज जिमीदार मरा ग्रामवाज भाजी गया।
मंचवाड़ि का वश मज एक ले निरया।
मिकुता मंचवाड़ि छोटी चौपट है सव।
करिव ग्राहकर गोछा लोटि ग्राहा जब।
हब को मारता घोड़ी का सिरम पड़े महाकाली जाप।
गंगा का तट हुर नसी गय साफ।
मार मार कर हर लुते लिख गया।
हाथ जोड़ अस्त्र अंक ले गौरि रें हैं क्या।
हर को भोट जिति बार जब माल व्यवे ल्योलास।
हो जाओ बिंदु तव तो कारण चढ़ोला।
हस्ते की घोड़ी हैं वाणीवार जब।
हाथ जोड़ श्रद्धाढा हर काँप तब।
मालुज़िति राजी खुशी जौटी बार श्रोला।
सुन क कलश स्वामी जहुर्डु चढ़ोला।
श्रद्धा करी हर नट लागी गन्धो।
दान पुर जुहार बाट तक्लाकोट गयो।
हर का तक्लाकोट में
तक्लाकोट बटी लंगी दिवेशी मुलुक।
श्रद्धा छुड़ी गोड़ी घोड़ी श्रापण मुलुक।
तुई मेरी इंजा बबा तेरा ला अरोही।
जती जाली मेरी घोड़ी विसू न बरसौ।
एक वात कण मज छाफ और्ध गय।
छाफ के लोग बाज महारी दुल दुल।
सिन्धु के चिंडी जो तून्हे वीमार।
मार मार पड़ हर में विलार।
वाता वाता गज हर परि मुड़े राने।
ईश्वर ने अधिन यो काम रचि नाह।
रात देखि बंद हृत मोड़ी है संयार।
ईश्वरी की नाम लिखी हृतवा सवार।
पैती रात चीत कूद दूसरी कोरोन।
तिसरी व रात घोड़ि लख महाचीन।
देती बट लेगी घोड़ि हुरिया को देश।
दिन हृतो छिपा जानी रात परबेश।
चौथी रात हुरिया का पांचो विचार मुख।
परदेशी जीव छिल्य भारी मिल दुख।
छटो रात घोड़ि हैंगे बास घो हैंग।
बसती छोड़ि बंद भाई जंगल बोलम।
रूटी लिक हलो हृत देवीक भवन।
देवीको भवन देवी खुशी हैंगो मन।
हृत का भवन भोतेर हृत लागिये नजर।
श्रद्ध भूपाण हैंगरी फूलो भेर फर।
श्रद्ध भूपाण कय हाथ जोड़ि ध्यान।
परदेशी जीव छों मैं मागनूं वर्दान।
मेरो रक्षा करि दिये भोतिया बीचम।
बिलिख मुलुक सता रहिये संगम।
स्वस्ततली बैंड जोला बचनो भागीन।
देवी पूजा करि बंद गई नीन।
नेमधारी चेलियों क रोजे छिय नेम।
नान धुना, देवी पूजा राती पर देव।
मालू का पूरब उज्ज्वाई मली मालू है संयार।
नाइ धौये बंद मालू करो बैर शुंगूर।
अरस धुपाण लिने मालु नंसी गेछ।
देवी का भवन मज अराधना केंद्र॥
मैं कौंत्य सांचि हली तु रहें भुक्ति॥
बारे वर्ष पूजा कबे तु कय लक भुक्ति॥
श्राविरी की पूजा मेरी सुनिये अरज॥
मन कसी बर दिये य तेरों फरज॥
पाली पछी रज हवो भारी बलवान॥
तीन दिनें माल हैंछा जाती बे निवान॥
मालुकी ले ध्यान तैरी देवी पूजा मजा।
बच्चों आज त्यहे हरू कानो मजा॥
हरू का खडी हुई गयो हरू बाई यो बुरज॥
पूजा करी मालु लौट जसी उ सुरज॥
मालु का मालु को नजर लेगे हरू पर जब॥
चबकत है गिरि गेछ मन्दिर में तब॥
हरू का मालु की हालत हरू देखीये रैगयो।
मालु पतोल्यूल कौंसी ये कणी कय हयो॥
मालु की बुरत हरू देखिये रैसया।
श्राविरी में चक्कर भाग ग्राफू गिरी गयो।
थोडी देर मज हरू होश आराई गई।
इतर सुगम्य छड़ि मालु होश आराई।
मालु का हरू कणी देखि मालु बड़े हर्ष हयो।
फिर ले मरद छिय हरूवे लै। कयो॥
हरू का कोई व्यक्त मैति गीति कयछ तेरो नाम।
देवी का भवन मज कयछ तेरो काम॥
मालु का—मालु कैंच सुणि लिया बात ले निदान।
बार वर्ष पूजा करी देवी है बेमान॥
भारी खानदान की छी कालु सैंके बेली।
दुनि मेरी नाम जाणू श्रो मालु रोटेली॥
आपण ले पत्रो सब बरी दियो नाम।
के तुमरी जात हली के करछा काम॥
हरू का—यतु बात सुणि हरू करछ सवाल॥
देवी ता निर्पत्ति मालु देवी है दयाल॥
सारे खल ते शुशानू लग तानू बटू।
जिला अलमोडा मेरो सल्ट तल्ला पट्टी॥
चार पट्टी मालिक छीं गुज्जूकोट थात॥
हरीसिह नाम हृयो हीत मेरी जात॥
बौड़ा ले कुणेल गंगेन मण्डल।
कमे बैर घरी जानी जमीदार भज॥
त्यर ले कारण मालु कस स्वक पाय॥
देवी ले दयाल हैछ जीले यां मिलाय॥
मालु का—हरू जोडी मालू कैंच बात सुणि म्यारा।
द्विय क्षण नसी जोला देश ले तुमरा॥
हरू का—हरू कैंच सुण मालु कसी देवी मत॥
सौराश्री निदेश मैंले एति त्यरा मैत॥
चोरी बैर ते लिजोला महणी धिककार॥
दुनिया का मैं वरूला सबे चोर जार॥
मालु का—मालू कैंचा निमंतना मैं जौ यानू घर।
घर जाई मालु ल्येमे जिथा को ले भार॥
पड़ि हली जाहू मालु चलात मन्त्र।
मालो बने हृसु धरी दिविया भितर॥

भवर बनाय धवड़ आकाश उड़रय॥
स्वामी का दिविया मालु धमेली दबाय॥

घर बाई बेर मालु सचेत बनाय॥
श्रापण ले दुसस मुस दियो ले लगाय॥

मालु कूंछ सुनो स्वामी मन करार हट।
करौँ मन जया तुम दक्षिण का बट॥

यतु कनै मालु नहीं धुमण बाजार।
दक्षिण मरोक्क खोलि मन में विचार॥
हृसु का—मरोक्क ले मन खोला मालु कहलै कूंछ।
श्रापण करी श्रानु जानीं मालु ऐछ।
दक्षिण मरोक्क बट नैं गोयो बाजार।

सात जेणी गंगला नैं विचारो का भार॥
गंगला संगला सात जेणी अलबेली।
जाहू का पड़िया हैंगा मालु कूंछी चेली।
गंगला का—सातों लै बैठाय हृसु सुतारी पलंग।
कसी बात कनी तब हस्बा का संग।
गंगला कौ नाम भुला मालु घर गया।

मालु घरे कहली गया कैल बहकाय॥
तुमरा कारण नहीं जवानी हामरी।
मैं हनौर बान श्रव को हली दूसरी॥
हृसु का—गंगला हैं हृसु कोंच सुनो मेरी बात।

मकणि तु क्रय छलली तिरिया की जात।
मेरी ले सामणी तेरी लिचली भ्रकल।
मालु हैं ग्री तैकी तिलेकु सकल।
गंगला का— गुस्सा मजि भरि बेर गंगला नसीगो बिल्तेर।
बंगाली को चेडा लिवे मन्त्र पढ़ि बेर।
नंग छद जाहू हरू नसीगो सिराण।
लाश पढ़ि रगे हरू उड़ि गो पुराण।
बगस में बन्द करो लिधे गेछ लाश।
बड़ु खोदी बड़े दिय बगीच में खास।
बात बेंगी खुँबी हैं तैरे हैंगे भर सर।
बाजार घुमण वटी मालु ऐंगो घर।
मालु का— बिल्तेर चहाय हरू तिलेकु मालिक।
कदरौ गया स्वामी मेरा के बिगड़ी लीक।
दक्षिण भरोखी पर लंगि गे नजर।
खुलिया भरोखी देखी हैं गे फिकर।
में जानू गया हात मरिंगे बेकाल।
हनें-२ मालु तब फोड़िया कपाल।
हनें-२ मालु कण तीन दिन हैंगी।
उद्याव हृणम तब स्वामी खेमा ऐंगी।
हर का— कआं जोला श्रापण देश रंगो तेरा भोट।
तिरों का घर गग मन होयो चोट।
तेरा ले बगीच मज खड़े रघू खाड़।
प्राण खजे पाणि मिले भड़ मारे डाड़।
तेरो मेरो श्रापस में ह प्रिं दिनो क योग।
मरै हृणि भोटा श्रापणि मन कये सोग।
मालु का—अंट स्वीण मज मालु एक दम जागी।
फावड़ कुटव लिने बगीचा जैजागी।
खड़े खानी बेर मालु खोल्दा बगशा।
घोरे कसिं फाट तब-देखि हैं लागा।
लाश ले पकड़ि मालु जिन्है गेछ घर।
जाहू पड़ि बेर मालु उतार जहर।
चेतत हैं हुँ हुँ राम राह कय।
हरू कणि देखि बौर मालु हर्ष हय।
हरू का—हरू कणि ऐगे तब गंगा की गाद।
गुर्स मज भरि बेर मन में बिखाद।
मुणा मेरी मालु कोच्चा हया मेरी तलबार।
मेले देखि धानू मालु भोटियों बाजार।
हरू मालु ग्रामस में बात कनी जब।
चोकीदार बाती कणि मूणि रय सब।
चोकीदार का—मार-ऊ कने हेंगो कालु सौके पास।
चोर वाई रोंच कोच्च त्यर घर खाल।
कालु सौक का कालु सौकों जब एति बात मुणी।
कालु चाह श्राय कोच्च हेंका ऐगे हुणी।
फौज सजी बेर कालु दाल लो तलबार।
जाहू का बट्ट पत्ति घाड़ी में सवार।
भोटियों पै लागी गेछ माल की तजर।
तब हैंगे मालु कणि स्वामी की फिरक।
मालु का मालु केंद मुणी स्वामी यी हेंगे अन्धेर।
छड़ वाह आई गाड़ी फौज सजी बेर।
तुम थामी तलवारः में पड़नू जाह।
तब कयो कालु चेली जब भोट साह।
घबराए भान तुम घरिया धीरज।
स्वामी के मट कणी नारी की फरज।
हुस का बड़ना—छत्री छसी चली छियो पड़िगो रणभ।
शेर जसी, पड़ जांचा हिरणों बणभ।
रण मजु कुडी घोड़ा हैगे हाहाकार।
अंक कणी हुस मारे घोड़ी मार चार।
भोटियों ले हुस पर धर जाहू मार।
मालु का मन्त्र भुज निवासिनी पार।
रण मजु भोटियों का हुस्वा जवान।
जड़ण भोगत तब बंडी का समान।
कालू शौक मारी दिया फौज सवे मोरी।
लाशों की तौ हेर लागी खून गगा मारी।
भोटियों का बंकी जो भोटिया छिया करनी ग्रज।
मालु ब्यवे बेर लिजा भीतरी फरज।
यतु बात सुण नेर हुस लौट गय।
सूर बीर मरी गय, पैंक कवे निरव।
हुस का—मालु हैती हुस कोई सुख मेरी बात।
स्वीणा माझु इजा देखि बेलिये की रात।
हिंट मेरी मालु त्यं भव भान जोला
मुड़कुट जाई मालु इजा सेवा कोला।
मालु का—मालु कैठ मैंति बिना है गाव अनाथ।
भोटक ले धन माल लादौ राव साथ।
हुस का—छड़ौ ले बंकरी ग्रज कर है लबोत।
भोट की तौ धन माल लादौ जा समान।
यात धन भोट मजिया तालिव बतानी।
य देश निर्धन भया रगीलो बतानी।
प्रिय भजन नहै गया देवी भवन।
हाथ जोड़ि हरूबे ते करी अराधना।
घ्नतबाली दिन कौंती दिया एक सौ श्राठ।
ख्वड़ा व बकरा लिंगे लागी गया बटा।
हरू का—मार मार करनौ द्वायेऐनी वागेश्वर।
तीन जिलों मज हरू दि हैछे खबर।
नाम है नामी जो सुनार वागेश्वर आया।
छटर कलवा तुम गड़ी लक जया।
बागेश्वरा सुनारों की कुलिये टुकान।
स्वरणों की लहर लैगे देखि ते ईसन।
बागनाथ को—छटर कलवा चढ़ श्री बागनाथ।
दिये संण सेवा कनी जोडी वेर हाथ।
मार मार कनौ अब लुलालख आया।
ही जीवा हिनोवा हरू गोरिये जड़ा।
लुलालख—डिबरा बंकरा नहैगी बाँसुई का स्थरा।
पडुवा द्वरथि कणी मिलिगे खबरा।
पडुवा काम—पडुवो ते धाद मारी चारों पटी मजा।
स्थर म्यार बांज कैघै कैघै ऐ जा कजा।
चारों पटी लोग ऐनी पडुवा का संग।
बाँसुई का स्थर तब उठ गयो दंग।
हरू का—मालू लैट जानू पढ़ हरूली तलबार।
लाहों की तौ देर लापे खुन की ले धार।
आठु मरा आठु भाजा पड़वा रे गयो।
कुला का कुल वान पर पड़वा दबायो।
सार मार कने तवा आया भिक्यासैण।
भिक्यवा का कानों मज पड़ गईं रेंग।
भिक्य का हाथ जोड़ि कोंच वन मेरा भाई।
सात देवताओं मज फिरी य तेरा दुहाई।
चैता का मैंहैं गयू सों लौट आय।
भोट जिती मालू व्यबै नामे कर्म आय।
बकरा दिबारा हैंग घड़ी को लदान।
भिक्यासैण बदी बाबू भगती हुकान।
पछिन हुकान रंगे आगिन गम्भीर।
घर किन माई पर लगीं हृसीण।
माता का—हाय हृष-२ कने कंठ में पराण।
कनाक देवताओं कुछ—उड़ती पराण।
तब तक आई गई हृष्वे घरवा।
मालू व्यबै लगों दिबारा बकरा।
महेंद्र का कट मजी प्राण नौड़ आय।
स्पर्श जै हृष्वा ऐंगे देवी हैं सहाय।
उड़ने नहेंटी तव हृष्वा माया जल।
भूलि रोष दुसू मुख, भूलि रोष काल।
दिबारा बकरा छोड़ि दिय आया घर।
चला ल्यागो पर आएं नागिरे गो नजर।
चला ल्यागो मनुष्य निवेस नां रोहित ध्यार।
इतिसंबोध में नाम राजे धरती की चार।
छड़ी व बंकरा का ले उत्तरी लदान।
गुजदुकोट जम कय भोटो को समान।
राजी खुशी भादो नहोंगो श्रासौज ले गयो।
कारिक महैन-अब माता हैती कोय।
मालू मन जाणे दिये भीजियो दगड़।
बिल्कुल भरिया छै वो करीज भगड़।
घरवड़ लै बंकर लिबै भावर नहे गयो।
मुणि-लिथा भाई लोहो श्रापिन कह हय।
कवि का-हर का बकरो खाई मालू हई रई।
मन मज हुश्वा का भीजि जाई रई।
तिरसरा दिन की बोट सुणिया जिगर।
जै दिन हुस लै आणो भावर बै घर।
कपड़ घुरहिणै गय बोराणिया सात।
हसि दु ग मज तब कसी हती वात।
भाभियों का-सादों का श्रापस में यस सत हवो।
जहां लक हरै श्माछ मालू मारो कय।
श्राब्धाई का पद मालू बकरी की स्वाई।
सादों लै लगभ धाड मालू लै बुलाई।
भोट की रणिया हई निदेला श्रों मछ।
कस हती मिरगों या कस हती मछ।
श्राब्धाई नीछ हुणि जब बौटेठ जें कुमति।
श्राब्धाई का बस बट मालू ऐगे बोटि।
मछ जै चहऩोल कछी सातों ले पकड़।
मन मने मालू कैठ ऐगे मेरी घड़ी।
मैं माफी मांगनु केवल सुनो मेरी हिंदी।
छोड़ो कने रामा मालु पर विचित।
भावियों का—निरंदेश भावियों ले रौज हुवै हैस्त।
हसु उड़ गयो मालु लाश पड़ी रैस्त।
भावर वे धृव जह वृथ हो सवार।
मार मार कने हृद आयो कोसी पार।
हृद का—हृदवै ले गाड़ी तब विरोधी बांसुई।
खट्टा खट्टा खट्टा लाग गे भांडुई।
भांडुई लागण मज मालु ऐह याट।
बांढी आंख पड़के गे मन में बिखाड।
माम-2 कने हृद आय गोय घर।
हाथ जोड़ि। माता हृदिन वृथ हृद खबर।
भावी सातै आंगी इजा मालु कती गई।
दिन यी आंखरी ऐहो मालु ले निघाड़।
भालु की बोज घोड़ों से बैठु चूहे हृद हृदिन बोजण।
बारे बांटे बकरी का हृद रढ़ वर्ण।
हृदवें मन मज लघाय विचार।
भालु मन निघास फक स्मर घर बार।
भालु नहै गेछ जानी आपण ले मैं।
लोटे बैर ल्याल कोंछ याँ घड़ी सैं।
माम-2 कने नैहू भगोती दुकान।
रात पड़ि गेछ तब धरिलिया ध्यान।
हृद कणी नीन पड़ि उद्याव हृदम।
सिराण में मालु बैठ्ठ स्वपना रथम।
मालु का व्याख्या में हृद्दर्तित मालु कौँ वाम हाथ जोदित बेर।
कौँ ज्वाला मोट हृद्रित मैत मरी बेर।
मैत गोती मारी बेर है मेघु अवास।
ग्रह छोटी गोच स्वामी तुमरी ले साध।
प्राइंग में मैत हृद्रित निचे मैत गोती।
रोका तवा हुवे हैलू तिथियाण छ जत।
साती ले ओ मत करो में दुबायँ गाड़।
भन कया स्मर जोक भन मारा डाड़।
उड़ि गय स्मर मोग मरी गया बेर।
स्मर ले कारण स्वामी भन करा बेर।
व्या कृिंया स्मर स्वामी कौर लिग एस।
स्मर शोक भन कोणम नो घरिला मैस।
हृद का जगान यथै बात मुणि हृद टुटि गेड़ नीन।
हृदवा व हीत ग्रह घय करे भाँचिन।
हाय मालु २ कने घबड़ा ले लौटाय।
मार-२ बने ग्रह हंसि दुःंग श्राय।
हृदवे नजर लें। रोका तलाहुमा।
मुखवी के तप मालु पुर्यों कसी जू।
हृद का हृदवे डूब मारी मालु गाड़ी भ्यार।
हृद कीछा है। मालु बिन मौते मरी।
बिलाय यो स्मर लिजिया मालु त्वाले कसी करी।
तु स्मर कारण मालु बिन मौत मरी।
मारी बेर गढ़ता ले में पड़ चो गाड़।
भरिया कौ ज्योत कय मारी भारी ट्राँड।
जादू पड़े बेर मालू मौटियों बीच म।
मयर ले कारण लबौले मेंते के खतम।
मैं मरती जब मालू तू बचानी अंग कर।
तू मरेगो गुज़ूकोट करी गेछें वांज।
एक श्रो घाड़ी मिज दूसरों छो।
मिजिया घाड़ी खोलो क्षती पीटी खो।
हंसी दुंगा मज हरू धरीछ सुकान।
घाड़ी का छाप शोती अंज ले पछाड।
हस्तवा वदन मज लाँग में गेछ अंज।
सबों मारी बेर गनाय सान।
जंगल में जाई बेर गनाय सान।
जम करी अंज हरू जां छिय तिथान।
मार-२ कनी हरू गुज़ूकोट अंज।
कलेजी में लगी रेछ बिरह को चोट।
सातों धम्यों। धामी खींची लाव घाट।
ज्यौं धार चित मज रहिं गो चिचाट।
सातों के भास के हैं। पर कणी अंज।
हाथ जोड़े माता हरू हस्तव ले कोय।
हरू का।-सांची जेन महेडो हली छोड़। हरू पराण।
तेरी गत मैं के जोला जा भ्रमी तिथान।
मालू मरी गेछ इजा मेले जानु सात।
पछाड़ मरली जब है। जाली कुंग।
सतवती हारे के बे। छोड़। दर।
माता। कण। यो धरे लोगो तिथान।

माता का—महेंद्र का चित्ता साल लगे हैं श्राग।
सिलाजली दिने वे रेड बने हैं खार॥
हर का—दक्षिण घबड़े को चित्रा श्रापण पूर्व।
श्रापण हातले हरु भस्मा, के सब॥
सब का भस्म होना मालु, गोदी थामी हरु छैएहो भस्म।
हाय राम हाय शिब सब है गये खतम॥
कवि का—मालु का कारन भया मरी में हीगार।
गुजुड़कोट बांज हैगो लैगई खुहार॥
कैंक भल हवार भया यस निर भाग।
नारी लै पुरुष सब हैदी गई खाग॥
नाम लै श्रमर हैजो धरती की चार।
महेंद्रि वचन छियो करिया विचार॥
ज्योति छियो हरुवौ को बड़ा नाम है।
मरी बेर धन हरु कस नाम रय॥
ज्योति जियाह हरु हैगुजुड़कोट रजा।
मरी बेर हरु हैग कोटनिको रजा॥
श्रापण इलाक मजे भिर्छ तमान।
वौज श्रो फरहर संग सबै लै समान॥
जग-२ मन्दिरै छै घाट घाट पूजा।
व्याख की निसाप कौंच काम निच दुजा॥
सब जग बट जब है जानि निरास।
श्राज लिबेर तब श्रानो त्यर पास॥
जैक ले कसूर देश जाँह तैया घर।
ये त्वोली कसूर कोंच दि चुला खबर।
बीरी ले साबित कोंच परे जाई बेर।
माल ले वाक्स कोंच धमकाई बेर।
रिपोट करनी जब ह्यर दरवार।
निशाप करछे रजा नाम छा संभार।
वन २ रजा तुम धन तेरी माया।
कसा कसा चला हुया यसा व्वे निहया।
श्राप इलाक मजि फिरुछा निदर।
मेरो वायो भन रोका दि द्वा खबर।
कौंति कौं गस्त ह्यर भोट तक जाँछ।
लौट बेर कोश्यान् नवा भावर ले प्राण।
श्राप इलाक मजि हैरो छ मशहूर।
निलाङु कौंच कोंच बिगर कसूर।
कनको ले जाई बेर प्रजेस कर।
तेरी प्रजमत देखि लोंग गया दहर।
धन रो महुँडी जेले दो दिया वचन।
रृणिका में नाम तेरो रूंगो सनातन।
हर्वी किनारु। अन पूरी भैरं भई।
श्राविना यों संबंधिता है लये महाई।
मयरा आ चनाई जौन दिलाव तथार।
भाग बन हर हीन सत्यली नार।